

लहरायेगा।

सिकन्दर—हम तुम्हारी हिम्मत की दाद देते हैं। तुम्हारे लोहे की ताकत पर हमारा सिर ऊँचा है सेल्यूकस!

कहते हुए सिकन्दर ने सेल्यूकस के कन्धे पर हाथ रखा और उसे अपने डेरे के भीतर ले आया। खेमे में अपने शाही पलंग पर बैठते हुए सिकन्दर ने कहा—‘तकदीर तदबीर की दासी है। जिसके पैर आगे नहीं बढ़ सकते हम उसे मुर्दा समझते हैं। बढ़ने वाले के साथ हवा भी उसी तरफ बढ़ चलती है। आज हवा हमारे साथ है। भारत वाले हमारा स्वागत करने के लिये हाथ बाँधे खड़े हैं। इस सम्पन्न देश पर यूनान का राज्य होते ही सिकन्दर को सारा संसार जीतने में देर नहीं लगेगी। इस देश में क्या नहीं है। इसकी जमीन से जाफरान की खुशबू निकलती है। ज्ञान, विज्ञान, सोना सभी कुछ तो इस देश में है। सिर्फ इस देश के पास एकता नहीं है, नहीं तो आज यह देश विश्वविजयी होता, सिकन्दर का स्वप्न स्वप्नमात्र ही रह जाता।

‘और हमें इस देश में फूट का विष फैलाए रखना है। गान्धार नरेश हाथ से निकलने न पाये, पुरू के विचारों में परिवर्तन न हो और इन्द्रप्रस्थ के राजा महानन्द से मिलने न पायें।

सेल्यूकस—हम सावधान हैं।

सिकन्दर—अब तुम विश्राम कर सकते हो।

सेल्यूकस—युद्ध के मैदान में और राह में जो सोता है वह अपने हाथों से अपना गला घोट डालता है। विश्राम कैसा हमारे बादशाह! अभी थोड़ी देर के बाद मुझे सेनानायकों से बातें करनी हैं। समय हुआ ही चाहता है।

सिकन्दर—तो तुम जाओ।

सिकन्दर भारतवर्ष का चित्र देखने लगे और सेल्यूकस सेनानायकों के शिविर में आ गये।

प्रधान सेनापति ने सबकी ओर देखते हुए कहा—आप सबकी बहादुरी से हमारी कदम-कदम पर जीत हुई है, लेकिन हमें जिस मोर्चे को फतह करना है वह अत्यन्त कठिन है। हमारा अगला मोर्चा गंगा और यमुना तट के उन राजाओं से है जिनके सीनों पर भाले टूट जाते हैं।

सेनानायक फिलिप ने हुंकारा भरते हुए कहा—हम मौत से भी